राजीव गांधी :

संगठन क्षमता की परीक्षण उड़ान:

क्या अमिताभ भी राजीव की टीम में शामिल होंगे?

आलोक मेहता

पश्चिमी प्रेस सदैव भारत की राजनैतिक तथा आर्थिक कठिनाइयों, कमियों तथा समस्याओं को उछालता रहा है. इसी क्रम में पिछले डेढ़ वर्ष के दौरान पश्चिम यूरोप के विभिन्न समाचार माध्यमों में भारत के संदर्भ में यह बात बहुत जोरों से उछाली गयी कि भारतीय प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी अपने बेटे श्री राजीव गांधी को अपना उत्तराधिकारी बनाने का प्रयास कर रही हैं. इसी दौरान पश्चिमी प्रेस ने श्री राजीव गांधी की कार्यपद्धति और क्षमता को लेकर भी अनेक प्रश्न उठाये. भारतीय प्रेस में प्रारंभ से राजीव गांधी को स्वच्छ छवि वाला व्यक्ति कहा गया था, लेकिन कुछ समय बाद यहां भी यह बात उठायी जाने लगी कि राजीव गांधी धीमी गति से चलने वाले व्यक्ति हैं और यह राजनैतिक उठकों झटकों के बिना पार्टी या सरकार में कोई पद कैसे संभाल पायेंगे? इसी बीच इंदिरा कांग्रेस द्वारा संगठनात्मक चुनाव का फैसला कर लिए जाने से यह प्रस्ताव उभर कर सामने आने लगा कि श्री राजीव गांधी पार्टी की बागडोर संभाल सकते हैं. तब पार्टी के ही कुछ पुराने धुरंधर दबी जबान से श्री राजीव गांधी की संगठन क्षमता के संबंध में आशंका व्यक्त करने लगे.' इसे संयोग कहा जाये अथवा योजनाबद्ध ढंग से उठाया गया कदम कि दिल्ली में आयोजित एशियाड में श्री राजीव गांधी को अपनी संगठन क्षमता दिखाने का अवसर मिला, और उन्होंने इस अवसर का पूरा लाभ भी उठाया.

श्री राजीव गांधी एशियाड के लिए गठित विशेष आयोजन समिति के एक सदस्य मात्र हैं, लेकिन यह तथ्य सर्वविदित है कि श्री राजीव गांधी ने एशियाड की तैयारी से लेकर इसके समापन तक आयोजन की सफलता के लिए हर संभव प्रयास किये. कभी एक कुशल प्रशासक के रूप में आयोजन समिति के सदस्यों और अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिये, तो कभी एक निष्ठावान कार्यकर्ता की तरह एक के बाद एक विभिन्न स्टेडियमों के चक्कर लगाते, कठिनाइयों की

एशियाड की व्यवस्था के लिए राजीव गांधी 'वाकी टाकी' लिए दौड़ भाग करते रहे, जब कुछ समय मिला मित्रों के बीच खेल देखा. नीचे के चित्र में बच्चन परिवार के साथ राजीव परिवार

सुविधाओं की जानकारी प्राप्त की और उन्हें आने वाली कठिनाइयों को दूर करने का प्रयास भी किया और इस सब के बावजूद कहीं भी आत्म प्रचार वाला कोई हथकंडा इस्तेमाल नहीं किया. लेकिन इस अभूतपूर्व आयोजन में पर्दे के पीछे चल रही गतिविधियों पर नजर रखने वाले यह जानते हैं कि श्री राजीव गांधी रात के दो दो बजे तक एशियाड संचालन के लिए अधिकारियों के साथ विचारविमर्श करते रहते थे. किसी न किसी स्टेडियम में अपने सहयोगियों से संपर्क बनाये रखने के लिए राजीव गांधी हाथ में वाकी टाकी लिए दिखायी दे सकते थे. आयोजन समिति के किसी सदस्य या अधिकारी ने कभी यह महसूस नहीं किया कि श्री गांधी की किसी कार्यवाही से काम में रुकावट आ सकती है.

इस पृष्ठभूमि में जब अधिकारी अथवा इंदिरा कांग्रेस के कार्यकर्ता स्वर्गीय संजय गांधी की कार्यपद्धति को याद करते हैं, तो उन्हें जमीन आसमान का अंतर नजर आता है. श्री संजय गांधी कड़ाई से अपने विचारों को व्यवहार में लाये जाने पर जोर देते थे पर उनके पास विश्वसनीय सलाहकारों की अपेक्षा निष्ठावान कार्यकर्ताओं की संख्या अधिक थी—उन्होंने अपने राजनीतिक जीवन में संघर्ष अधिक किया—कभी अंदर और कभी बाहर. वह दो टूक बात करने वाले व्यक्ति थे. जबकि राजीव गांधी को अब तक किसी तरह के संघर्ष में नहीं उलझना पड़ा है. न तो उनका स्वभाव लड़ने भिड़ने वाला है और न ही वह राजनीति की पुरानी लीक पर चलना चाहते हैं. शायद यही कारण है कि वह मौन रहकर और बड़ी बड़ी बातें करने की अपेक्षा कुछ ठोस काम कर दिखाने के लिए हर संभव प्रयास कर रहे हैं. सुनियोजित ढंग से राजनैतिक और प्रशासनिक दायित्व निभाने के लिए उन्होंने अपने विश्वसनीय मित्रों, सलाहकारों और सहयोगियों की एक टीम भी बनायी है. इस टीम में राजनैतिक शतरंज के पुराने खिलाड़ी तो नहीं हैं, लेकिन देश की सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक समस्याओं को गहराई से समझने वाले लोग इसमें शामिल हैं. फिर राजीव गांधी पुरानी और नयी पीढ़ी के साथ तालमेल

इधर काम करना चाहते हैं, न तो वह नई पीढ़ी के लोगों को मक्खी की तरह बाहर निकाल फेंकने के लिए कृतसंकल्प हैं और न ही युवा पीढ़ी के राजनैतिक कार्यकर्ताओं को 'पोलिटिशियन' तथा कार्यालयीय मानकर सत्ता की राजनीति से दूर रखने के लिए इच्छुक हैं.

अगले दो वर्षों में कांग्रेस पार्टी अपना शताब्दी समारोह मनाने जा रही है. शताब्दी वर्ष की तैयारी की इस घड़ी में यह बात उठायी जाने लगी है कि इस समय सभी कांग्रेस जनों की एकता के लिए प्रयास होने चाहिए. 1969 में कांग्रेस की विभाजन की जो प्रक्रिया शुरू हुई थी, वह अब तक जारी है. कभी सिद्धांतों को लेकर तो कभी व्यक्तियों को लेकर कांग्रेस से लोग टूटे हैं और जुड़े हैं. इस समय कई पुराने कांग्रेसी विरोधी दलों में हैं और कई किसी दूर दराज इलाके में शांत बैठे हुए उचित अवसर का इन्तजार कर रहे हैं. दूसरी तरफ इंदिरा कांग्रेस में इस बात पर निरंतर चर्चा हो रही है कि विभिन्न राज्यों में नेतृत्व की क्षमता वाले लोगों का अभाव है. जो नये चेहरे लाये गये हैं वे न तो संगठन संभाल पा रहे हैं और न ही सरकार और सत्तारूढ़ पार्टी की अच्छी छवि बना सकने में समर्थ हैं. राजनैतिक क्षेत्रों में यह संकेत भी मिले हैं कि प्रधानमंत्री श्रीमती गांधी स्वयं भी स्थिति से चिंतित हैं. शायद यही कारण है कि श्रीमती गांधी और उनके सलाहकार पार्टी को एक नये सिरे से संवारने का काम श्री राजीव गांधी को सौंपने के प्रस्ताव पर विचार कर रहे हैं. और श्री राजीव गांधी स्वयं भी यह विश्वास रखते हैं कि पार्टी में नयी जान डालने की पर्याप्त गुंजाइश है. कोई कारण नहीं कि व्यापक स्तर पर इस पार्टी का सदस्यता अभियान नहीं चल सके. कोई कारण नहीं कि समाज में प्रतिष्ठा रखने वाले विभिन्न वर्गों के लोग पार्टी के साथ मिलकर काम करने को तैयार न हों.

श्रीमती गांधी के साथ बैठने पर भी राजीव का ध्यान अपने काम पर है

ऐसी स्थिति में कुछ लोगों ने यह सुझाव भी दिया था कि श्री राजीव गांधी बिना किसी विलंब के ही कांग्रेस अध्यक्ष क्यों नहीं हो जाते. लेकिन समझा जाता है कि श्रीमती गांधी किसी रूप में यह प्रदर्शित नहीं होने देना चाहती हैं कि वह राजीव गांधी को सीधे सीधे पार्टी का नेतृत्व सौंपने के लिए ही लायी थीं. प्रारंभ से ही उनका यह प्रयास रहा है कि श्री राजीव गांधी उनके साथ रहकर पार्टी और सरकार के तौर तरीकों को समझें और स्वतंत्र रूप से काम करने के लिए पर्याप्त अनुभव प्राप्त करें. जहां तक श्री राजीव गांधी का प्रश्न है वह भी उत्तराधिकारी के रूप में मिलने वाले किसी पद में दिलचस्पी नहीं रखते. उन्होंने कई बार स्पष्ट किया है कि वह पार्टी के कार्यकर्ताओं का विश्वास और समर्थन पाने के बाद ही कोई दायित्व संभालेंगे. इसी दृष्टि से उन्होंने संगठन के चुनाव की आवश्यकता पर भी जोर दिया और लगता यही है कि वे बाकायदा चुनाव होने पर ही पार्टी की बागडोर अपने हाथ में लेंगे. वैसे भी उनके सलाहकारों की राय थी कि दक्षिण भारत और त्रिपुरा में होने जा रहे चुनावों से पहले उन्हें पार्टी का नेतृत्व नहीं संभालना चाहिए, क्योंकि इसके परिणाम का प्रभाव उनकी छवि पर भी पड़ सकता है. भले ही इस चुनाव के लिए वह सक्रिय रूप से हिस्सा लेंगे लेकिन संगठन को संभालने के लिए उन्हें निरंतर चुनौतियों का सामना करते रहना होगा. यदि संगठन के चुनाव मार्च तक संपन्न हो जाते हैं तो आगामी आम चुनाव के लिए उन्हें लगभग डेढ़ वर्ष मिलेंगे. और इस अवधि में उन्हें नीचे से ऊपर तक पार्टी को एक नया रूप देना होगा. यह भी संभव है कि पार्टी का नेतृत्व संभालने के तत्काल बाद उन्हें जम्मू कश्मीर और अन्य राज्य विधानसभाओं के चुनाव के लिए रणनीति बनानी पड़े.

विश्वसनीय सलाहकार, जो राजीव गांधी की सफलता के लिए कृतसंकल्प हैं. बाएं से— सर्वश्री अरुण सिंह, विजय धर, श्रीकांत वर्मा तथा सिद्धार्थ रेड्डी

श्री राजीव गांधी की राजनैतिक रणनीति बनाने के लिए कार्यरत टीम निश्चित रूप से असाधारण कही जायेगी. श्री राजीव गांधी ने प्रारंभ से ही अपनी राजनैतिक गतिविधियों का केंद्र प्रधानमंत्री का निवास नहीं बनाया वरन् 2-ए, मोतीलाल नेहरू मार्ग स्थित बंगले को अपने कार्यालय का रूप दिया. श्री राजीव गांधी सप्ताह में दो दिन सुबह के समय यहीं अपने निर्वाचन क्षेत्र से आने वाले लोगों, देश के विभिन्न हिस्सों से आने वाले कार्यकर्ताओं, विधायकों, संसद सदस्यों, अधिकारियों आदि से भेंट करते हैं. इसी कार्यालय में उनके सहयोगी श्री वार्ड भेंटकर्ताओं के लिए समय निर्धारित करते हैं और पत्र व्यवहार का काम संभालते हैं. इसी कार्यालय में सलाहकार या सहयोगी कहे जा सकने वाले विश्वसनीय मित्र श्री राजीव गांधी के काम के लिए आधार तैयार करते हैं. ये मित्र श्री राजीव गांधी के राजनीति में आने से पहले भी उनके मित्र थे और उन्हें सत्ता की चकाचौंध से अधिक चिंता अपने मित्र के भविष्य के प्रति रहती है.

इन्हीं सलाहकारों में श्री विजय धर सर्वोपरि हैं जो आर्थिक नीतियों के संबंध में अधिकाधिक जानकारी एकत्र कर श्री राजीव गांधी को देते हैं. श्री विजय धर भूतपूर्व केंद्रीय मंत्री स्वर्गीय दुर्गाप्रसाद धर के पुत्र हैं और श्री राजीव गांधी के स्कूली जीवन के साथी हैं. उनका अपना व्यापार रहा है और आर्थिक दृष्टि से उन्हें राजनीति से कुछ नहीं लेना देना, इसलिए वह एक तटस्थ आर्थिक विशेषज्ञ के रूप में अपनी बात कहते हैं. इसी तरह औद्योगिक क्षेत्र से आने श्री अरुण सिंह भी इसी कार्यालय में बैठकर राजीव गांधी का काम बांटते हैं. एशियाड के दौरान तो अरुण सिंह ही श्री गांधी के सेनापति के रूप में चारों

राजीव गांधी की गतिविधियों का केंद्र—2-ए, मोतीलाल नेहरू मार्ग —जहां मंत्री से लेकर आम आदमी तक का प्रवेश बेरोक टोक हो सकता है. यहां देश के विभिन्न हिस्सों से आने वालों का तांता लगा रहता है. नीचे के चित्र में अमेठी से आये एक प्रतिनिधिमंडल के साथ चर्चा करते हुए सिद्धार्थ रेड्डी. (चित्र : विमल सक्सेना)

तरह कार्यरत कर रहे थे. स्कूली जीवन के साथी होने के कारण अपना मित्र बेझिझक राजीव गांधी से अपनी बात कह पाने में समर्थ हैं. इसी टीम में संसद सदस्य और प्रसिद्ध लेखक श्रीकांत वर्मा शामिल हैं, जो राजनैतिक विषयों के अलावा सांस्कृतिक और प्रेस संबंधी नीति विषयों पर श्री राजीव गांधी को अपनी राय देते हैं. श्री श्रीकांत वर्मा कांग्रेस प्रचार अभियान समिति के संयोजक होने के नाते इसी कार्यालय से पार्टी की छवि बनाने वाले कार्यक्रम तैयार करते हैं. कांग्रेस विभाजन से लेकर अब तक श्री श्रीकांत वर्मा निरंतर श्रीमती गांधी के विश्वसनीय सहयोगी रहे हैं. इसलिए वह श्री राजीव गांधी के साथ भी संपर्क स्थापित कर हर कदम उठा रहे हैं.

अपने संसदीय निर्वाचन क्षेत्र अमेठी पर पूरा ध्यान रखने के लिए श्री राजीव गांधी ने अपने एक अन्य मित्र **श्री सिद्धार्थ रेड्डी** को लगाया हुआ है. श्री रेड्डी अमेठी के चुनाव से पहले ही इस क्षेत्र में कार्य कर रहे थे और चुनाव के बाद वह बराबर अमेठी से संपर्क बनाये हुए हैं. बताया जाता है कि वह महीने में दो बार अमेठी की यात्रा करते हैं और इस क्षेत्र के 13 विकासखंडों में जाकर इस क्षेत्र के लोगों से वहां की समस्याओं का पता लगाकर इनके निदान का रास्ता निकालते हैं. साथ ही श्री राजीव गांधी को उसकी जानकारी देते हैं, ताकि आवश्यकतानुसार प्रदेश के नेताओं और अधिकारियों को पत्र आदि भेजे जा सकें. दिल्ली पहुंचने वाले अमेठी के लोगों की पहली मुलाकात श्री रेड्डी से ही होती है और आवश्यकतानुसार यह तय कर लिया जाता है कि उनका श्री राजीव गांधी से मिलना कितना आवश्यक है. हां, उत्तर प्रदेश की राजनीति पर राय देने का काम संसद सदस्य **श्री अरुण नेहरू** करते हैं.

इसी टीम में अमिताभ बच्चन जैसे लोकप्रिय फिल्मी अभिनेता को जोड़े जाने की बात पिछले दिनों राजनीतिक बाजार में तेजी से फैली है. इसमें कोई शक नहीं कि बच्चन परिवार प्रारंभ से ही नेहरू परिवार से जुड़ा रहा है. स्वर्गीय संजय गांधी के साथ भी अमिताभ की अच्छी पटती थी. और राजीव को वह बचपन से पसंद करते रहे हैं. फिर हाल की बीमारी के बाद बच्चन परिवार भी अमिताभ को फिल्मी झमेले से अलग रखने के लिए प्रयत्नशील है. लेकिन समस्या यह है कि अमिताभ बच्चन ने फिल्म जगत में इतने अनुबंध और वायदे किये हुए हैं कि उन्हें पूरे करने में दो वर्ष लगेंगे. इसीलिये अमिताभ बच्चन सक्रिय राजनीति में आ जायेंगे, ऐसा कोई संकेत अभी न उनकी ओर से मिला है, न ही श्रीमती गांधी या श्री राजीव गांधी ने इस विषय पर कोई स्पष्ट निर्णय किया है. श्रीमती गांधी की कार्यपद्धति को समझने वाले प्रेक्षकों का कहना है कि वह जल्दबाजी में कोई फैसला नहीं करेंगी.

श्री राजीव गांधी के निकटस्थ सूत्रों का कहना है कि एशियाड के दौरान अमिताभ बच्चन का ध्यान रखने और बच्चन परिवार को अपना निजी अतिथि बनाने के पीछे राजीव की यह मंशा कतई नहीं थी कि अमिताभ को किसी तरह दिल्ली रखने के लिए राजी किया जाये. यह स्नेह और सद्भाव तो पुरानी मित्रता का परिचायक है.

इन सूत्रों का कहना है कि दो मित्रों को एक साथ देखकर लोगों ने अटकलें लगानी प्रारंभ कर दीं, लेकिन फिलहाल अमिताभ 'राजनीतिक सहायता' के लिए राजीव की टीम में नहीं आ रहे.

बहरहाल यह बात तय है कि श्री राजीव गांधी के लिए 'परीक्षण' का दौर पूरा हो गया है और अब वे देश के विभिन्न हिस्सों का दौरा कर पार्टी को अधिक मजबूत बनाने का बीड़ा उठाने के लिये तैयार हैं. कर्नाटक और आंध्र के चुनाव के लिये तो उन्होंने पहले से पृष्ठभूमि तैयार कर रखी थी. उनके अपने विश्वसनीय प्रेक्षकों ने अरसा से इन राज्यों में जाकर राजनीतिक स्थिति का अध्ययन किया था और सफल हो सकने वाले प्रत्याशियों के नाम सुझाए थे. अब देखना यही है कि राजीव गांधी की भावी 'राजनीतिक उड़ान' की तैयारी कितनी सफल रहती है! ■